स्वास्थ्य के बारे में अगल बगल के पड़ोसी से जानकारी भी अवश्य लेनी चाहिये। टीकाकरण एवं अब तक हुई बीमारियों के बारें में सही सही जानकारी होने से उसके उत्तम स्वास्थ्य पर भरोसा किया जा सकता है।

च. पशु की जनन क्षमता

एक आदर्श दुधारू गाय वही होती है जो प्रतिवर्ष एक बच्चा देती है। पशु क्रय करते समय उसका प्रजनन इतिहास अच्छी तरह जान लेना चाहिए। यदि उसमें किसी प्रकार की कमी हो तो उसे कदापि नहीं खरीदना चाहिए। क्योंकि कभी भविष्य में समय पर पाल न खाने, गर्भपात होने, स्वास्थ्य, बच्चा नहीं होने, प्रसव में कठिनाई होने इत्यादि कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

छ. गर्भ की जांच

पशुओं को खरीदने में कभी कभी पशु की पहचान करने में धोखा हो जाता हैं। अतः चयन करते समय यदि गर्भ की जांच करने वाला कोई जानकार या पशु चिकित्सक हो तो उससे गर्भ जांच करा लेना चाहिए।

ज. अयन की बारीकी से जांच

दुधारू गाय भैंस की खरीद करते समय अयन और थनों की बारी की से जांच कर लेनी चाहिए जिससे थनैला बीमारी के बारे में भली प्रकार से पता चल सके। यदि थन में गांठ, सूजन आदि के लक्षण हैं तो थनैला हो सकता है। ऐसे पशु को भूलकर भी नहीं खरीदना चाहिए। अगर हो सके तो ऐसे पशु के पेट, फुले अयन पर दबाव देकर देख लेना चाहिए।

झ. वंशावली

हमेशा ऐसे पशुओं को खरीदने का प्रयास करना चाहिए जिनका जन्म, प्रजनन आदि से लेकर उत्पादन आदि का रिकार्ड मालुम हो। ऐसा रिकर्डधारी दुधारू पशु यदि कहीं से प्राप्त होते है तो चयन के समय पर उन्हें ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

ण. संतान का उत्पादन

दुधारू पशुओं का चुनाव उनकी संतान के उत्पादन के आधार पर किया जाना अधिक लाभकारी होता है। इन संतान में माता पिता दोनों के गुण सम्मिलित रहते है। अतः जिन पशुओं के संतान की उत्पादन क्षमता अधिक है, उन्हीं का चयन किया जा सकता है। दो ब्यातों का अन्तराल करीबन 14–15 महीना होना चाहिए। ब्याने के तीन माह पश्चात् ही गाय का पुनः गर्भधारण कर लेना अच्छा माना जाता है। अच्छी गुणवत्ता के पशुओं का उत्पादन, उनमें पाये जाने वाले अनुवंशीय गुणों पर आधारित होता है।

अतः पशुपालकों को सुझाव दिया जाता है कि दुधारू पशु का चुनाव करते समय उनकी शारीरिक बनावट, नस्ल, दुग्ध उत्पादन क्षमता, प्रजनन क्षमता एवं उम्र इत्यादि बिन्दुओं पर विशेष रुप से ध्यान दें। इसके अलावा यह भी देखना चाहिए कि पशु पूर्णरूप से रोगमुक्त हो। जहां तक संभव हो, गर्भवती गाय, भैसों का क्रय करना उचित रहता है। यदि पशुपालक ऊपर बताई गई बातों को अमल में लाकर दुधारू पशुओं का चयन/खरीदारी करतें हैं तो लगाई गई पूंजी से अधिक से अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते है।

Jandiyal Printing Press # 2553140

दुधारू पशुओं का चयन

खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें

डा. सुधीर कुमार
सहायक प्राध्यापक
डा. उत्सव शर्मा
प्राध्यापक
डा. अनिल कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक

मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान संकाय, रणबीर सिंह पुरा
शेर-ए-कश्मीर
कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू।

दुधारू पशु का चयन करना कोई आसान काम नहीं हैं। एक अच्छे पशु चयन के निर्याण में कई महत्वपूर्ण गुणों का समावेश आवश्यक होता है। दुधारू गाय भैंस को खरीदते समय नस्ल के अनुसार उसके वाह्य आकार, वंशावली, दूध देने की क्षमता आदि का अधिक ध्यान देने की जरूरत होती है। पशुपालन एवं डेयरी व्यवसाय में दुधारू पशुओं के दूध देने की क्षमता का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए गाय–भैंस की चयन/खरीदारी करते समय कुछ विशेष जानकारी होना आवश्यक होता है। दुधारू पशु की खरीद में बड़ी पूंजी खर्च होती है और इसके अच्छे गुणों के ऊपर ही डेयरी व्यवसाय का भविष्य निर्भर करता है। अतः अच्छी दुधारू गाय–भैंस का चयन/खरीदते समय पशुपालकों को निम्नलिखित गुणों का ध्यान देना चाहिए।

क. शारीरिक संरचना

दुधारू गाय की पहचान उसकी त्रिभुजाकार शारीरिक बनावट से की जा सकती है। दुधारू पशुओं का शरीर आगे से पतला तथा पीछे से चौड़ा, नथुना खुला हुआ, जबड़ा मजबूत, आँखे उभरी एवं चमकदार, त्वचा पतली, पूंछ लम्बी, कन्धा शरीर से भली भांति जुड़ा हुआ, छाती का भाग विकसित, तथा पीठ चौड़ी एवं समतल होना चाहिए। दुधारू गाय की जांघ पतली एवं गर्दन पतली लम्बी एवं सुस्पष्ट होनी चाहिए। पेट काफी विकसित होना चाहिए। अयन (थन) की बनावट समितीय, त्वचा कोमल होना चाहिये। चारों चूचक एक समान लम्बे एवं मोटे, एक दूसरे से समान दूरी पर होना चाहिए।

ख. दुग्ध उम्पादन क्षमता

अयन पूर्ण विकसित और बड़ा होना चाहिए। खरीदने से पूर्व उसे स्वयं दो तीन दिन तक दुहकर भली भांति जांच कर लेना चाहिए। दूहते समय दूध की धार सीधी गिरनी चाहिए तथा दूहने के बाद थन सिकुड़ जाना चाहिए। गाय भैंस के थनों और अयन पर पाई जाने वाली दुग्ध शिरायें जितनी स्पष्ट, मोटी और उभरी हुई होगी पशु उतना ही अधिक दूध देने वाली होगी।

ग. दूसरे अथवा तीसरे ब्यांत का पशु

दुधारू पशु का चयन करते समय हमेशा दूसरे अथवा तीसरे ब्यांत की गाय भैंस को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। क्योंकि इस दौरान दुधारू पशु अपनी पूरी क्षमता के अनुरूप खुलकर दूध देने लगते है और यह क्रम लगभग सात ब्यांत तक चलता है। प्रयास यह होना चाहिए कि दूसरे तीसरे ब्यांत के समय गाय भैंस एक माह की ब्याही हुई हो और उसे नीचे मादा बच्चा हो। ऐसा करने से उक्त पशु के दूध देने की क्षमता का पूरा ज्ञान होने के साथ ही बछड़ी मिलने से भविष्य के लिए एक गाय भैंस और प्राप्त हो जाती है, जोकि भविष्य की पूंजी है।

घ. खरीदने से पूर्व दुग्ध दोहन

गाय भैंस की खरीद करते समय लगातार तीन बार दुग्ध दोहन अपने सामने अवश्य करा लेना चाहिए ताकि पशु की सही दूध की मात्रा का पता लग जाये।

ङ. पशु की आयु

दुधारू पशु का चयन करते समय उसकी सही आयु की जांच के लिए निम्नलिखित तरीके अमल में लाये जाते हैं जिससे कोई आपको पशु की आयु कम बता कर धोखा नहीं दे सके।

1. दांतों को देखकर

पशु की सही आयु का पता लगाने के लिए उसके दांतों को देखा जाता है। मुंह की निचली पंक्ति में स्थायी दांतों के चार जोड़े होते है। ये सभी जोडे एक साथ नहीं निकलते है। दांत का पहला जोड़ा पौने दो वर्ष की उम्र में, चौथे वर्ष के अन्त की उम्र में निकलता है। इस प्रकार से दांतों को देखकर नई और पुरानी गाय भैंस की सटीक पहचान की जा सकती है। सामान्यतः पशुओं की जनन क्षमता 10–12 वर्ष की आयु के बाद समाप्त हो जाती है। दुधारू पशु अपने जीवन के यौवन और मध्यकाल में अच्छा दुग्ध उत्पादन करता है।

2. सींग के छल्लों को देखकर

गाय भैंस के सींग के छल्ले भी आयु का अनुमान लगाने में मददगार साबित होते है। प्रथम छल्ला सींग की जड़ पर प्रायः 3 वर्ष की आयु में बनता है। इसके बाद प्रतिवर्ष एक एक छल्ला और आता रहता है। सींग पर छल्ला की संख्या में दो जोड़ कर गाय भैंस की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है। भैंस की मुर्रा नस्ल आज भी अपने मुड़े सींगों के कारण ही पहचानी जाती है।

3. पशु की सेहत देखकर

पशु की सेहत देखकर पशु की आयु का अनुमान लगाया जा सकता हैं। बूढ़े पशु की अस्थि सन्धियां कमजोर हो जाती है और पशु धीमी गति से चलता है। उसकी त्वचा ढीली हो जाती है और मुंह से दांत गिर जाते है। इसके विपरीत युवा अवस्था की भैसों व गायों का शरीर सुन्दर, सुडौल, चुस्त, चमकदार त्वचा तथा चर्बी कम होती है। पशु का स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिये तथा